अनुक्रम

1. दलगज राजनीति का दलदल (बूंदें 1–22)
2. व्यक्ति का चुनाव (बूंदें 23–25)
3. 2019 लोकसभा चुनाव के परिपेक्ष्य में दलगल राजनीति (बूंदें 26–56)
4. दलविहीन लोकतंत्र : विपक्ष (बूंदें 57–59)
5. दलविहीन तंत्र में सरकार परिवर्तन (बूंदें 60–61)
6. दलविहीन तंत्र में नेता का चुनाव (बूंदें 62–63)
7. सदस्यों की प्रतिबद्धता (बूंदें 64–65)

01

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–1

एक ही वोट से व्यक्ति और पार्टी (या उसके नेता) दो मूल्यों का चुनाव मूलतः गलत अवधारण है।

- हम वोट व्यक्ति को देते है, तो वह पार्टी बदल लेता है।
- पार्टी एक नेता में सिमट जाता है।
- हम वोट पार्टी को देगें तो वह कोई भी अनचाहे व्यक्ति के रूप में सामने होगा।
- पार्टी का विलय/विभाजन हो जाता है।
- पार्टी बदलने से विभाजन और विलय से आपके वोट (जनतंत्र) का मजाक ही होता है।
- **सच देखा जाय तो धोखाधड़ी एवं अपराधिक है।**
- **हम विवश देखते रहते है।**

02

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–2

दलविहीन लोकतंत्र की अनिवार्यता

- आज की राजनीति का आधार वोटों की संख्या है।
- वोट का आधार ?
- धर्म / जाति / क्षेत्र / भाषा / **पैसा** / गलत प्रचार / गलत प्रभाव?
- उपाय – दलविहीन लोकतंत्र।

03

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–3

बिहारियों को अक्सर 'बाहरी' कह कर प्रताड़ित किया जाता है। (अन्य क्षेत्रवाद भी है) क्योंकि एक राजनैतिक पार्टी का निर्माण करना उसके लिए जन समर्थन उगाहना था। यह संविधान के रोजी–रोजगार, आने जाने के लिए एक देश की राजनैतिक सीमा की अटूट अवधारणा के बिल्कुल विपरीत है– अपराधिक है।

इतने असंबैधानिक बात पर भी सभी **पार्टियां** चुप रहती हैं। उन्हें भी तात्कालिक लाभ लेना होता है। वोट की जोखिम नहीं उठा सकते।

04

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–4

इसी प्रकार खालिस्तान बनने लगता है। बोडो लैण्ड बनने लगा था। हिन्दुस्तान टूटने/बिखरने के कगार पर पहुँचता रहता है। जान–माल की भारी क्षति होती है। हजारों बेकसूरों की जानें जाती हैं, तरह–तरह के आधारों पर बनावटी दंगे कराए जाते हैं क्योंकि इससे इस या उस **राजनैतिक दल** को फायदा पहुँचता है।

मुद्दों की राजनीति होनी चाहिए पार्टी/दल की नहीं

05

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–5

– कोई प्राकृतिक विभिषिका होती है या कोई बड़ी दुर्घटना या चर्चित होने लायक कोई भी घटना (जो धर्म, भाषा, क्षेत्र इत्यादि, जो भी तात्कालिक कारण बन पड़े, उसके आधार पर) होती है तो सभी मिलकर उसका सामना करने की जगह उस पर राजनीति करने लगते हैं, पार्टी का जनाधार जो बढ़ाना होता है।

क्या यह लोक के हित में हैं ?

06

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–6

देश को प्रगति की राह पर ले जाने का कार्य दोनों (पक्ष / विपक्ष) / सभी पार्टियों / पक्षों का है।

विरोधी पार्टी (Opposition) की अवधारणा (Concept) गलत है। विरोध के लिए विरोध, शासन में आने के लिए विरोध, वोट बैंक बनाने / बढाने के लिए विरोध गलत है लेकिन पार्टी का हुक्म है।

07

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–7

एक स्वयं सेवी संस्था Association for Democratic Reforms द्वारा सूचना के अधिकार के तहत प्राप्त की गयी जानकारी के अनुसार कुछ समय पूर्व राजनितिक पार्टियों के पास पार्टी पार्टी फण्ड में (✦ कांग्रेस – 2008 करोड़, ✦ भाजपा – 994 करोड़, ✦ बसपा–484 करोड़, ✦ कम्युनिस्ट – 417 करोड़) था। ✦ इतना ज्ञात है, लिखित है, अलिखित ? ✦ इतना पार्टी के पास है, पार्टी के लोगों के पास ? ✦ इसमें सिर्फ 15 प्रतिशत ज्ञात स्रोत से, अन्य 85 प्रतिशत का स्रोत अज्ञात है।

08

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–8

सोचें–

क्या बिना अनुचित लाभ की इच्छा के किसी ने पार्टी फंड में दिया ?

क्या उसकी भरपाई अनुचित लाभ देकर, सामान्य जनता के पैसों से ही नहीं की गयी; की जाती रहेगी ? (सीमेंट, लोहा अन्य उपयोग वस्तुओं के दाम एकाएक ही बढ़ जाते हैं।)

भ्रष्टाचार की उत्पत्ति पोषण एवं लगातार संवर्धन का कारण दलगत राजनीति ही है।

09

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–9

पार्टी अमूर्त है। अतः व्यक्तिगत जबावदेही नहीं तय हो सकती है।

राजनैतिक पार्टियाँ एक गैंग है, जिन्हें 'आम'/आवाम से कोई सरोकार नहीं और गैंग की तरह ही इनके कब्जे के क्षेत्र हैं, जिसमें इनकी मनमानी चलती है, शासन में आना (या दुसरे को कार्य नहीं करने देना) ही उद्देश्य है।

10

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–10

राजनैतिक दलों के बजूद के लिए भ्रष्टाचार आवश्यक है।

पार्टी एक विशालकाय हुजूम है।

शासन में आने पर और विशालकाय हो जाता है, जिसके सभी व्यक्तियों (परिवार सहित) की भौतिक आवश्यकताएँ की पूर्ति सिर्फ भ्रष्टाचार द्वारा उत्पन्न धन द्वारा ही संभव है।

किसी भी पार्टी की आर्थिक आवश्यकता का स्रोत जायज हो ही नहीं सकता है।

11

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–11

पार्टी की आर्थिक आवश्यकता व्यक्ति की आवश्यकता से हजारों–लाखों गुणा ज्यादा हो जाती है।

इस आवश्यकता के कारण सरकारी नीतियाँ एवं निर्णय देशहित/लोकहित के विरुद्ध होते हैं।

स्पेक्ट्रम घोटाला, कोयला घोटाला, वस्तुओं के मूल्य में अतिशय वृद्धि इसी कारण होती है।

पार्टी के लिये जमा किए गए हर एक रुपये का मूल्य जनता के 100 रुपये से कहीं ज्यादा है।

इससे पंचायत से लेकर पूरा प्रशासनिक तंत्र भ्रष्ट हो गया है।

12

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–12

चुनाव के लिए राष्ट्रीय संसाधन से फंडिंग, लूट का दूसरा रास्ता हो जाएगा एवं इससे भ्रष्टाचार और भी बढ़ेगा। यह सामान्य जनता के टैक्स का सबसे बुरा उपयोग होगा।

– बड़े लोग कई/दोनों पार्टियों (पक्ष/विपक्ष) को फंड देकर हर तरफ से नीतियों को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं।

– चुनावी वांड एक अत्यंत भ्रष्ट उपाय है।

13

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–13

व्हिन (Whip) बिलकुल अलोकतांत्रिक है। यह गैर संवैधानिक करार होना चाहिए।

व्यवस्थापिका का निर्णय सभी सांसदों का व्यैक्तिक योगदान नहीं होकर विह्प के कारण अलोकतांत्रिक हो जाता है। केवल पार्टी के नेता की इच्छा रह जाती है। सांसद/संसद के मत का मतलब ही नहीं रह जाता है। पार्टी भी नहीं उसके नेता का मत रह जाता है।

✦ संसद की यह मौलिक कल्पना कि कोई निर्णय सांसदों का सामूहिक निर्णय है, समाप्त हो जाता है।

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–14

राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री बनने से लेकर अन्य बातों तक के निर्णय पार्टी हाई कमान से थोपे जाते हैं।

✦ जब पार्टियों में आंतरिक लोकतंत्र ही नहीं तो ये बाहर लोकतंत्र की रक्षा कैसे कर सकते हैं!

15

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–15

दलगत राजनीति के कारण वोट–बैंक बनाए जाते हैं जिसका आधार, धर्म, सम्प्रदाय, जाति, भाषा, क्षेत्र, वर्ग, रोजगार और अब लिंग एवं उम्र भी होने लगा है। यह लोगों को बाँट देता है।

यहाँ तक कि करोड़ों विदेशियों को प्रश्रय देकर पार्टी का वोट बैंक बढ़ाया गया है। जैसे रोहिंग्या, बंगला देशी इत्यादि।

हमारे कुछ नेता इसके लिए देश द्रोह की सीमा तक जाने में परहेज नहीं करते।

पहले भी ऐसा हुआ देश बटें तो बटें नेता तो हम ही बनेगें और देश बंट गया।

16

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–16

- किसी भी गैंग के आगे हम अपनी बात एक जुट होकर नहीं कर पाते हैं।
- (गलत को गलत नहीं कहते, सामूहिक सोच का निर्माण नहीं करते।)
- "हमें क्या पड़ी है?" सोच कर तबतक सो जाते है जबतक प्रहार हम पर नहीं होता।
- **जब प्रहार होता हो तो सह लेतें है, झुक जाते है, टूट जाते हैं, विखर जाते है। चुन चुन कर खा लिए जाते है। सामूहिक सोच का निर्माण ही रास्ता है।**

17

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–17

सही व्यक्ति विभिन्न पार्टियाँ में होने के कारण सम्मिलित रूप से विकास को गति देने में समर्थ नहीं होते हैं।

पार्टियाँ देश के लिए एक साथ एक दिशा में काम नहीं कर एक दुसरे के विरुद्ध कार्य करती हैं।

पार्टी के शक्तिशाली नेता अच्छे लोगों की जगह सिर्फ हाँ में हाँ मिलाने वाले कमजोर व्यक्ति को ही प्रश्रय देते हैं।

असक्षम व्यक्ति या व्यक्तित्व / राज्यपाल / मुख्यमंत्री / प्रधानमंत्री हो जाता है।

18

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–18

दल–बदल, सांसदों की खरीद फरोख्त, राजनैतिक अस्थिरता, अनावश्यक अत्यंत खर्चीला आम चुनाव, राष्ट्रिपति शासन दलगत राजनीति के कारण ही होते हैं।

छोटे बड़े अपराधियों / तस्कर, आतंकवादियों, देश–द्रोहियों जो देश की मुलभूत संरचना को कमजोर करते हैं को राजनैतिक, संरक्षण और समर्थन मिलता है क्योंकि ये पार्टी का वोट बैंक बनते और बनाते हैं।

19

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–19

- नये समीकरण बनाकर पार्टी तोड़कर या जोड़कर सत्ता पर काबिज होना पार्टियों एवं राजनीतिज्ञों का मुख्य ध्येय हो जाता है।
- उनका सारा समय इसी में व्यतीत हो जाता है।

20

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–20

दलगत राजनीति के कारण गठबंधन (Coalition) सरकारें बनती हैं जो अस्थिर होती है, देशहित में सही एवं कड़े निर्णय नहीं ले सकती है। सत्ता का बंदर–बाँट हो जाता है।

21

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–21

2 या 3 दलों का शासन भी दलगत राजनीति की खामियों से नहीं उबर पाता है; बल्कि अपना जनाधार स्थायी करने के लिए और भी घातक हो जाता है, ज्यादतियाँ करता है। सुना है अपने ही देश के एक राज्य में जब तक एक खास पार्टी के आप सदस्य नहीं होते आपकी फरियाद भी थानों में नहीं सुनी जाती। नौकरियां नहीं मिलते, कॉलेजों में दाखिले नहीं होते।

आप खुद सोचें – अनगिनत अन्य कारण आपको समझ में आ जाएगा।

22

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–22

- किसी पार्टी की कोई विचारधरा नहीं है। सिर्फ शासन में आना ही मकसद होता है। अन्यथा विलय / विभाजन नहीं होता।
- जितने व्यक्ति उतने विचार तो क्या उतनी पार्टियाँ होगी (वहु एवं प्रादेशिक पार्टियों की वजह से केन्द्रीय शासन कमजोर होता है)।
- सत्ता में रहने पर जो पार्टी स्वयं कोई विधेयक लाती है वही विपक्ष में होने पर उसका भी विरोध करती है।

23

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–23

हम व्यक्ति का चुनाव करें !

- व्यक्ति की योग्यता ही प्रधान होगी।
- गुण–दोष का आकलन आसान होगा।
- भ्रष्टाचार की आवश्यकता ही कम से कम होगी।
- अपेक्षाकृत आसानी से उन्हें वापस किया जा सकता है।
- राजनैतिक अस्थिरता नहीं रहेगी।
- **संसद एक सतत संस्थान बना रहेगा।**

24

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–24

हम व्यक्ति का चुनाव करें।

- संसद का निर्णय सही मायने में लोकतांत्रिक एवं बहुमत वाला हो जाएगा।
- विभिन्न सही व्यक्ति एक राष्ट्रीय सरकार में एक साथ कार्य कर सकेंगे।
- जनता के प्रति व्यक्ति, नेता सीधे तौर पर जबावदेह होगा।

25

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–25

हम व्यक्ति का चुनाव करें।

- चुनावी मशीन का निष्पक्ष रहना आसान होगा।
- चुनाव प्रक्रिया अत्यन्त कम खर्चीली होगी।
- वोट के लिये सामूहिक आतंकवाद की आवश्यकता नही होगी।
- वोट के लिए समान्य जन का विभिन्न वर्गों में विभाजन नहीं होगा।
- विरोध के लिए विरोध नहीं होने से कोई निर्णय जल्दी एवं सही होगा।

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–26

लोक सभा 2019

- जिसने कभी सोना नहीं देखा 3–5 ग्राम सोना मुफ्त में मिलने से क्यों खुश नहीं होगा?
- जिसने कभी अपना टी.वी. नहीं रखा वह मुफ्त में टी.वी. मिलने से क्यों खुश नहीं होगा?
- यदि सिर्फ 2/– रु. किलो चावल मिलेगा, तो जरूरत से ज्यादा लेकर बेचकर क्यों खुश नहीं होगा?
- जिसके खाते में हजार रुपये नहीं होता, वह 1 लाख रुपये जमा होने की खबर मात्र से खुशी से पागल क्यों नहीं होगा?

सिर्फ एक मुहर ही तो लगाना है।
अपना क्या लगता है।

27

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–27

लोक सभा 2019

व्यापक स्तर पर धर्म आधारित अलगाव, ध्रुवीकरण, समाज तोड़ने की प्रक्रिया, सेना पर राजनीति, उलूल–जलूल टिप्पणी, लिंग/जाति पर (अन्य सभी कार्य एवं गुण गौण हो जाते है), आतंकवाद, अतिवादियों, घुसपैठियों के समर्थन में, पार्टियाँ (गैंग) ही खुले आम विनाश फैला सकती है। एक अकेला व्यक्ति चुनाव जीतने के लिए यह सब नहीं कर सकता है। देश दल विहिन तंत्र में ही सुरक्षित रहेगा।

28

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–28

लोक सभा 2019

चुनावी बॉड – अबतक बड़े–बड़े लोगों से दोहन को नैतिक/उचित/काले को सफेद करने का / पार्टी और बड़े कारोबारियों के अनुचित सम्बध को जायज ठहराने का तरीका मात्र है।

इसकी आवश्यकता भी सिर्फ दलगत राजनीति के कारण ही है।

29

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–29

लोक सभा 2019

- व्यक्ति जुड़ा रहता है किसी एक क्षेत्र से, पार्टिया टिकट देती है दुसरे क्षेत्र से, फिर भी जीत जाता है। कैसे ? पार्टी एवं उसके कार्यकर्ता रूपी गैंग के चलते।

- क्या यह प्रतिनिधित्व है ?

- लोकतंत्र है ?

30

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–30

लोक सभा 2019

पार्टियाँ – टिकट बेचती हैं।

खरीदने वाले का कोई उत्तरदायित्व पार्टी, समाज, देश किसी के भी प्रति नहीं हो सकता है।

वह पैसा तो हमसे ही उगाहेगा, या देश की कीमत पर ही उगाहेगा।

31

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–31

लोक सभा 2019

- पार्टी से टिकट नहीं मिलने पर – निर्दलीय लड़ेगे, (कहाँ गयी पार्टी, कहाँ गई विचारधारा ?)

- जीतने के बाद मोल जोल करेगें। पिछली/जीतने वाली पार्टी में शामिल हो जायेगें।

(लोगों के वोट का क्या महत्त्व हुआ वोट तो व्यक्ति को मिला था)

32

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–32

लोक सभा 2019

दलगत राजनीति पूर्णतः अलोकतांत्रिक है, प्रतिनिधत्व कौन कर रहा है ? पार्टी या व्यक्ति ?

- लोकतंत्र की भावना के विरूद्ध है।
- किसी न किसी गैंग का समान्य जन पर जबर्दस्ती का शासन है।

33

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–33

लोक सभा 2019

राजनैतिक पार्टियाँ एवं इसके लोग सत्ता से पैसा और पैसा से सत्ता हासिल कर रहे हैं।

✦ RTI में आने से ये एक स्वर से विरोध करते हैं। क्यों ?

✦ एक मत से अपनी सुविधाएँ/भत्ते बढ़ाते रहते है । एक बार चुने जाने पर जिंदगी भर पेंशन पाते हैं। एक से ज्यादा जगहों से पेंशन पाते हैं। क्यों ?

34

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–34

लोक सभा 2019

– राजनैतिक पार्टियों को चन्दा देना किस प्रकार की देश/सामाजिक सेवा है जो इसे आयकर से शत प्रतिशत छूट के दायरे में इन्हीं लोगों ने रख दिया है।

- हम इनका मुँह ताकते रहते है।
- हम इनके लिए कोई मायने नहीं रखते।
- हम इस दलगत राजनीति के गुलाम हो गए है।

35

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–35

लोक सभा 2019

चायवाला हो, खिलाड़ी हो, या मनोरंजन करने वाला; पढ़ा हो, बेपढ़ा हो लोकतंत्र में सभी समान रूप से सांसद/प्रतिनिधि बनने के अधिकारी हैं।

परन्तु राजनैतिक दलों द्वारा खोज कर उनलोगों की सस्ती लोकप्रियता का लाभ उठाकर संख्या बल बढ़ाना अनैतिक है, गलत है।

ऐसे लोग हमारे कानून बनाने वाले, हमारे भाग्य नियंता हो जायेगें।

ये न संसद में जाते हैं, न इसकी समझ है, न कभी भागीदारी करते हैं। अपने अपने दल के लिए केवल संख्या–मात्र हो जाते हैं। कैसा जन प्रतिनिधित्व है ?

36

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–36

लोक सभा 2019

सही व्यक्ति सामाजिक कार्यकर्ता या राजनैतिक कार्यकर्ता / हम सामान्य जन चुनाव लड़ने में असमर्थ हो जाते हैं, क्योंकि चुनाव जीतने के लिए पैसा बल, बाहुबल, से ज्यादा अब राजनैतिक दल–बल आवश्यक है।

यह सब दलगत राजनीति के कारण है।

37

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–37

लोक सभा 2019

- चुनाव नैतिक/अनैतिक, विभाजन, प्रलोभन या जबर्दस्ती जीते जाते हैं।
- किसी को तो जीतना ही है।
- इनकी मर्जी के अनुसार हम Direct / Indirect नित नये Tax देते हैं, और ये आन–बान–शान से सफेद कुर्ता–पाजामा में शासन करते हैं, इनके लिए समाज हित/देश हित कुछ भी मायने नहीं रखता हैं।

38

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–38

लोक सभा 2019

– राजनैतिक पार्टियों में हाई कमान की संस्कृति से जब आंतरिक लोकतंत्र की ही हत्या हो चुकी है तो हमें लोकतंत्र का सुख कैसे मिलेगा !

✦ यह हाईकमान संस्कृति वंशवाद में बदल चुकी है, लोकंतत्र है कहाँ ?

जागृत ! उतिष्ठ !!

✦ सत्ता में हमारी कोई भागीदारी नहीं रह गयी हैं, लोग हमारा वोट छीन ले रहे हैं।

39

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–39

लोक सभा 2019

आतंकवाद, अतिवाद (नक्सल इत्यादि), धार्मिक गुटबाजी सभी राजनैतिक पार्टियों के बल बूते पनपते हैं और ये बदले में उन्हें बल और जन प्रदान करते हैं और हम निरपराध जन समान्य के रूप में, पुलिस/सुरक्षा बल और सैन्य बल के रूप में अपना बलिदान देते रहते हैं।

40

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–40

लोक सभा 2019

- एक पार्टी अपनी उपलब्धियाँ भी नहीं गिना पा रहा है क्योंकि इतने ज्यादा है।
- दूसरी पार्टी के पास सिर्फ यह कहने को है कि इसने क्या नहीं किया। या सिर्फ 'चोर' हैं जैसे आरोप !

– अपना किया कुछ भी कहने को नहीं है, घोटालों के सिवा।

- एकदम से विपरीत प्रकृति / चाल / सोच वाले पहले बिल्कुल दुश्मनों की तरह रहने वाले, सब एक जुट हो गये हैं। क्योंकि एक बहुत बड़ा भय (Survival) का पैदा हो गया है।
- चुनावी घोषणा पत्र में कुछ भी लिखें, घोषित उद्देश्य केवल एक व्यक्ति को हारने मात्र का है।

41

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–41

लोक सभा 2019

- चुनावी क्षेत्रों में, बूथों पर, बंगाल में अन्य जगहों पर भी मार पीट हो रहे है।
- लोगों की मौत हो रही है।
- लोग विभाजित हो रहे है।
- व्यक्तिगत दुश्मनी पैदा हो रहा है।

यदि पार्टियाँ नहीं होती तो क्या एक चुनाव लड़ रहा व्यक्ति इतने क्षेत्रों में दंगे कराता ?

42

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–42

लोक सभा 2019

- राष्ट्रीयता/राष्ट्रिय भावना (सह– जीवन) का लोप आज का सबसे बड़ा संकट है।
- इसका एक मात्र कारण नेताओं की लोलुपता/घोर पतन है।
- एक भी व्यक्त्वि समान्य लोगों के लिए उदाहरणीय नहीं है।
- ये घोर अनियमितताओं / अनैतिकताओं के प्रतीक हो गए है, परन्तु ये हमारे भाग्य विधाता बने हुए है। धीरे–धीरे 'आज के आदर्श' होते जा रहे हैं।
- ऐसा सिर्फ इसलिए हो गया है कि इन्हें एक राजनैतिक दल (गैंग) चलाना है। इसके लिए इन्हें किसी भी प्रकार का वैचारिक, आर्थिक,/अन्य कुकृत्य करना पड़ता है।

दल एक राक्षस है, हमें निगलता जा रहा है।

43

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–43

लौक सभा 2019

- राष्ट्रिय परिदृश्य बहुत भयावह है। ममता बनर्जी को पूरा हिन्दुस्तान नहीं तो हिन्दुस्तान की कीमत पर बंगाल तो चाहिए ही।
- दक्षिण के कुछ नेताओं की भी मानसिक स्थिति यही है – वे छद्म शब्द 'फेडेरल' का इस्तेमाल कर रहे हैं।
- कश्मीर, वोडो लैण्ड, गोरखा लैण्ड, खालिस्तान, नागालैंड इत्यादि की समस्या तो एक कदम आगे ही है।
- एक सशस्त नेता नहीं नायक की सख्त आवश्यकता है। दल का नेता कभी भी देश का नायक नही हो सकता है।

44

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–44

लोक सभा 2019

- मेरे एक अत्यंत प्रबुद्ध मित्र, जिसने दुनिया देखी है कहा – 'तलाश' की बातें तो ठीक है, परन्तु बिल्ली के गले में घण्टी कौन बांधेगा ?

– कौन ?

- बिल्ली तो रोज चूहा खा ही रही है। मुझे भी खालेगी / खा ही रही है, तो क्या फर्क पड़ेगा।
- यदि लोग सुन / पढ़ रहे हैं तो कभी न कभी कुछ होगा जरुर इसी आशा में हूँ।

45

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–45

लोक सभा 2019

- ममता बनर्जी ने अपना आपा खो दिया है।
- ममता बनर्जी ने सभी हदें पार कर दी हैं। यह साफ–साफ केन्द्रीय बलों (केन्द्र सरकार) के खिलाफ, राज्य पुलिस अपने राजनैतिक गुर्गो द्वारा, रोहिंग्या आदि द्वारा मरवाने की सीधी–सीधी चाल है।
- यह बंगाल को देश दे अलग थलग कर अपना Autoerotic शासन तंत्र लागू करने का साफ–साफ ऐलान है।
- यह देश द्रोह नहीं तो क्या है ?
- यदि दलगत राजनीति नहीं होती तो ममता बनर्जी ऐसी हरकतें नहीं करती।

46

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–46

लोक सभा 2019

– कितनी रैलियाँ, कितने रोड शो ?

– हर रैली में लाउड स्पीकर, टेंट सामियाने, बस, करों का काफिला

कितना खर्च ?

किसका पैसा ?

किस काम आया ?

विकाश / सुरक्षा / सविधान की स्क्षा ?

– पुनः विधान सभा / लोक सभा के लिए अभी से पैसों का इंतजाम करना है।

– हमारी आपकी बात कब होगी ?

– यदि सिर्फ व्यक्ति चुनाव लड़ता तो यह सब कुछ नहीं होता।

47

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–47

लोक सभा 2019

- नई सरकार की चुनौतियाँ बहुत अलग हो गयी है।
- सड़कें, अस्पताल तो उन्नत होते ही जायेगें, टैक्स से जो पैसे बरसते है उससे तो कार्य होगें ही।
- मुश्किल है : राष्ट्रिय अनुशासन, राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास ✦ सत्ता, सम्पन्नता दोनों में सबों की भागीदारी / कुकुर्मुतो की तरह क्षेत्रीय पार्टी को रोकना जाति, धर्म, पार्टी, भाषा, क्षेत्र एवं गुट बाजों के स्वार्थ को रोकना / समाप्त करना।

क्रमशः

48

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–48

लोक सभा 2019

मुश्किल है :–

✦ मिडिया को बिकाऊ / षड़यंत्रकारी होने से रोकना और सही दिशा देना।

✦ न्यायपालिका की विश्वसनीयता बढ़ाना, आदरणीय और प्रभावी बनाना।

✦ ये दिक्कतें और बढ़ेगी क्योंकि अपने को कुछ का ही सही (दल का) नेता बन कर रहना उनके बजूद (Survival) के लिए जरुरी है।

इसके लिए कोई भी हथकण्डा प्रयुक्त होगा इसे रोकना होगा।

49

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–49

लोक सभा 2019

✦ खो जाने / समाप्त हो जाने के डर से कुछ ताकतें बहुत जोर लगाएगी, मुसलमान का / हिन्दू का / दलित का, गाय का, मंदिर का और ऐसे अन्य नारे पहले से ज्यादा बुलंद होने शुरू हो गए है और होगें।

क्रमशः

50

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–50

लोक सभा 2019

✦ सत्ता/शासन तो एक ही रहेगा परन्तु ऐसी स्वायंत संस्थाओं/Civil Society का निर्माण/विकाश आवशयक है जो स्वतंत्र और निरपेक्ष रूप से, अहंकार के टकराव से ऊपर उठकर सिर्फ और सिर्फ देश हित में कार्य करें। लोकपाल / न्यायपालिका यह नहीं कर सकती है।

✦ यदि दलगत राजनीति नहीं होगी तो ऐसी संस्थाएँ मजबूत होगी और वोट बैंक की चिन्ता किये बगैर वे कार्य कर सकेगें। उनको दबाना (क्योंकि यह व्यक्ति नहीं संस्था होगी) मुश्किल होगा।

51

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–51

लोक सभा 2019

- सम्पन्न चुनाव ने तलाश की मान्यताओं को पूर्ण स्वीकृति दी है।
- पुरे देश ने एक व्यक्ति को राजदण्ड सौपा है।
- सभी दल एवं उनके फूलते पिचकते नेता, जो अपने को प्रधानमंत्री के रूप में पेश करने की होड़ में थे, हवा हो गए।
- यह सीधा जनादेश है कि देश/लोग पार्टी नहीं व्यक्ति चुनते हैं उनपर भरोसा करते हैं, उसपर उत्तरदायित्व सौपते हैं (और वह व्यक्ति देश के प्रति उत्तरदायी होता है) न कि आकारहीन, आधारहीन पार्टी पर।
- इस बदलाव की बहुत जरुरत है।
- नायक उभर आया है।

नेता नहीं नायक की ही आवश्यकता है।

52

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–52

लोक सभा 2019

✦ देशद्रोहियों/घोटालेबाजों को सजा देना राज धर्म है। चाहे कोई राजनैतिक रूप से, अधिकारिक रूप से या आर्थिक रूप से कितना भी समर्थ हो, लोकतंत्र में जनादेश से ज्यादा समर्थ कोई नहीं हो सकता है।

✦ इस बात की भी जरुरत है कि जो लोग चुनाव जीतने के लिए हर प्रकार के हथकंडे अपना रहे थे उनसे पूछा जाय, जिम्मेदार ठहराया जाय और सजा दी जाय, अन्यथा ऐसे विषधर पुनः सर उठायेंगें।

क्रमशः

53

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–53

लोक सभा 2019

✦ "भारत तेरे टुकड़े होगें, बिना काम के सभी के खातों में 72 हजार डालूँगा / सोना / टीवी मुफ्त में दूंगा", आतंकियों को छोड़ूंगा, प्रधानमंत्री (राजीव गाँधी) के हत्यारों को छोड़ूंगा; CRP के ड्रेस में RSS के लोग हैं, रोहिग्न्या / घुसपैठ जायज है। नागरिक पंजी नहीं बननी चाहिए देश में असहिष्णुता फैला गयी है।

✦ इसका हिसाब तो होना ही चाहिए।

✦ तभी चीन जैसी शक्ति, उत्पादन और देश को मिल सकती है।

54

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–54

लोक सभा 2019

"भारत तेरे टुकड़े होगें .....
कितने अफजल मारोगे .....
हर घर से अफजल निकलेगा.....

इसके समर्थन में नामी गिरामी फिल्मकार, पत्रकार, वरिष्ठ राजनितिज्ञ प्रचार करने पहुँच गए।

– ये लोग सिर्फ 'दल' की वजह से ही पहुँचे एवं अनर्थ को भी सही बता रहे थे।

क्रमशः

55

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–55

लोक सभा 2019

- ऐसे लोगों को जबर्दस्त थप्पड़ लगा।
- यह करना आवश्यक था।
- मतदाताओं को नमन !
- कोई व्यक्ति नहीं हारा;
- वह संस्कृति हारी जो देश विरोधी नारों, कार्यों को मिडिया को आकर्षित करने का और फिर नेता बन जाने का फार्मूला मानते हैं।
- **कितना घातक होगा यदि सभी लोग यही फार्मूला अपनाने लगें।**

56

दलगत राजनीति का दलदल, क्रम–56

लोक सभा 2019

- यदि ध्यान से देखें तो अपने देश का हर राजनैतिक दल पर किसी एक ही व्यक्ति का अधिपत्य है। अध्यक्ष कोई भी हो।
- वह व्यक्ति अपने दल का इस्तेमाल सिर्फ अपनी महत्वाकांक्षा मुख्यमंत्री / प्रधानमंत्री एक हस्ती, बने रहने के लिए करता है
- इसमें लोकतंत्र कहाँ है ?
- लोकतंत्र सिर्फ पार्टियों कें समाप्त होने से ही हो सकता है क्योंकि तब सचमुच मुख्यमंत्री/प्रधानमंत्री का चुनाव लोगों के बीच से होगा।

57

लोक तंत्र : संगठित विपक्ष

- 'ईश्वरपुत्र राजा' की अवधारण से राजतंत्र एवं अधिनायक बाद के बाद लोकतंत्र का अविर्भाव हुआ है।
- मानवीय सामाजिक व्यवस्था की अगली विकाशावस्था ही लोकतंत्र है।
- लोकतंत्र का आधार है :– इंकार करने/असहमत होने का अधिकार (Right to disagree) अर्थात विपक्ष ?
- असहमत होने और विरोधी होने में उत्पक (Constructive) होने/और अवरोधक (Obstructive)होने का फर्क है।
- सत्ता प्राप्त करने की लोलुपता में विपक्ष विनाशक/घातक (Destructive) हो जाता है।
- इसलिए संगठित विपक्ष/दलगत विपक्ष लोकतंत्रा का समर्थक नहीं होकर अवरोधक हो जाता है।

58

संगठित विपक्ष : लोकतंत्र

- एक राय यह भी है।
- एक रास्ता यही भी है।
- इसमें ये खराबियाँ है।
- यह एक दूसरा दृष्टिकोण है (Counterpoint) है।

यह सब निर्माण का हिस्सा है। परन्तु "विरोधी दल" लोकतंत्र का ही विरोधी हो जाता है। यह उद्देश्य से भटकने या सत्ता काबिज करने का अनुचित रास्ता हो जाता है।

दलविहीन लोकतंत्र : विपक्ष

दलविहीन संसद में किसी भी मुद्दे पर असहमति जताने/संशोधन सुझाने का अधिकार कर्तव्य हो जाता है।

सभी सुझावों/असहमति को समायोजित करना या फिर बहुमत से निर्णय करना ही उचित प्रतीत होता है।

- प्रस्तावित किसी मुद्दे पर बहुमत नहीं प्राप्त होने का मतलब सरकार (मंत्री / प्रधानमंत्री) के गिरने का नैतिक/या वैधानिक प्रावधान/समझ बिल्कुल गलत है—यह सिर्फ उस मुद्दे विशेष के स्वीकृत होने या नहीं होने की बात है।

60

दलविहीन तंत्र : सरकार परिवर्तन

- निर्धारित कार्यकाल तक कार्य करने का अवसर मिलना अच्छा है।
- गलत को निर्धारित समय से पहले हटना भी आवश्यक है।
- प्रधानमंत्री का हटना पुरे मंत्रिमंडल का हटना है जबकि किसी एक मंत्री को भी सदन नकार सकता है।
- यह विशेषरूप से लाये गए अविश्वास प्रस्ताव के द्वारा हो सकता है। (आवश्यक मत 75% होना चाहिए।)
- दलविहीन तंत्र का आधार बेहतर, ईमानदार, देश/सामाज के प्रति समर्पित एक प्रबुद्ध व्यक्तित्व है।

सदन एक सतत संस्था बनी रहेगी।

दलविहीन तंत्र :
प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मंत्री

- अभी ऐसी विकास अवस्था नहीं है कि एक व्यक्ति को किसी देश का हरेक नागरिक जानता हो और सभी सही–गलत का चुनाव करने में सक्षम हो।
- अतः प्रधान / मुख्यमंत्री का चुनाव (आनुपातिक / परोक्ष) ही हो सकता है। वही समूचे देश का प्रतिनिधित्व कर सकता है।
- इसमें विरोधाभास नहीं है बल्कि अधिनायकबाद के खतरे को ही समाप्त कर देता है।
- सदस्यों / सांसदों के बीच से प्रधान / मुख्य मंत्री के चुनाव की कई विधियाँ / प्रणालियाँ हो सकती है–यह विचारणीय है।
- एक सुझाव के रूप में यह चरण–वद्ध हो सकता है, जबतक कि एक व्यक्ति को 50% या ज्यादा सांसद / सदस्य समर्थन नहीं देते हैं।

62

दलविहीन तंत्र : मंत्रिमंडल

- एक गाड़ी में जुती हुई सभी शक्तियों को एक ही दिशा में चलने/जोर लगाने से गाड़ी बढ़ सकती है; उसकी प्रगति में तेजी आ सकती है।

- अतः मंत्रिमंडल या कार्य मण्डली का निर्माण / चुनाव प्रधान / मुख्यमंत्री का ही अधिकार होना चाहिए। उनके कार्यों की समीक्षा मुख्य/प्रधानमंत्री के अलावे पूरा सदन कर सकेगा, इससे सभी सचेतन एवं सक्रिय रहेंगे।

सदस्यों की प्रतिवद्धता चुनावी क्षेत्र या पूरा देश/समाज राज्य?

- कोई सदस्य/सांसद अपने क्षेत्र की समस्याओं और विकाश पर केन्द्रित हो यह अपने आप में दलविहीन व्यवस्था की एक विशेष उपलब्धि है।

- दलगत व्यवस्था के तहत लोगों का निश्चित चुनावी क्षेत्र भी नहीं होता, न क्षेत्र में उनकी उपस्थिति रहती है। उनकी प्रतिबद्धता दल या उसके नेता के प्रति अधिक होती है।

दल–विचारधारा : चुनावी घोषणा–पत्र

- यदि दल की विचारधारा के कारण लोग किसी पार्टी में होते तो पार्टियों की कमान वंशानुगत नहीं होता।
- मुख्यमंत्री का पद पति नहीं तो पत्नी, नहीं तो पुत्र, नहीं तो पुत्री, नहीं तो दामाद नहीं होता।
- दल–बदल नहीं होता।
- घोषणा पत्र समस्याओं की पहचान एवं तदनुरूप कार्रवाई का संकल्प होना चाहिए, यह अर्ध बंधनकारी (Semi Permanent) होना चाहिए।
- यह अक्सर चुनाव से कुछ ही दिन पहले प्रकाशित होते हैं समान्यजन तक इसकी पहुँच नहीं होती। इसके कार्यान्वयन की कोई वाध्यता नहीं होती, लोक लुभावन भ्रामक अनैतिक (Unethical) होते हैं।
- 5ग्राम सोना, मुफ्त में टी.बी. मुफ्त में बैंक खाते में हजारों/लाखों रुपये डालना, मुफ्त में बस, मेट्रों में सफर कराना, कर्ज माफी का सिलसिला लगाना हो जाता ह जो गलत है।

समर्थन : दल

- दल का निर्माण सभी गलत सही मुद्दों के लिए होता है जबकि समर्थन सही मुद्दों पर ही हो सकता होता है।
- समर्थन होना और दल के विहप में बंधे होना में आकाश–पाताल का फर्क है।
- गाँधी, जे. पी. इत्यादि किसी पार्टी के नहीं थे परन्तु मुद्दों पर व्यापक जनसमर्थन के चलते ही क्रांतिकारी कार्य हुए; बाद में पार्टी बन गयी यहाँ से लोकतंत्र का ह्रास हुआ और उनकी दुर्दशा हो गयी।
- प्रथम लोकतंत्रा 'लिच्छिवी' में दल नहीं था भारतीय संविधन में भी शुरू से दल का प्रावधन नहीं था।, बाद में जोड़ा गया।

66

तलाश

- जितनी अराजकता, अनुशासन हीनता, रीति रिवाजों की अवहेलना, आत्म नियंत्राण की कमी सांसद संसद में करते हैं उतनी शायद सामान्य जन/लड़के कॉलेजों में भी नहीं करते हैं।
- ये हमारे लिए कायदे और कानून बनायेगें। ये मार्यादित, शालीन, अनुकरणीय व्यवहार कब और कैसे करेंगे?

  जब ये आत्मानुशासन विहीन है, जब ये उदहरणीय बर्ताव नहीं कर सकते, सामान्य लोगों को समुचित व्यवहार का संदेश नहीं दे सकते, तो कुछ असामान्य जनों से क्या अपेक्षा रखते हैं।

किसी न किसी 'दल' का बल ही इन्हें अराजक बनाता है।

तलाश

प्रधान मंत्री के सशक्तिकरण की सख्त आवश्यकता है।

- मदरसों का आधुनीकरण और समयानुसार संवर्धित करना ।
- आतंकबाद के खिलाफ आंदोलन (crusade) ।
- द्रुत विकास के अवरोधों को हटाना ।
- आगे चलकर मिडिया को, न्यायालय को, देश/समाज हित में मोड़ना, सैन्य सेवा अनिवार्य करना इत्यादि अत्यंत कठिन कार्य वे अकेले नहीं कर सकते हैं।
- दलगत राजनीति इनके हर अच्छे कार्य का भी विरोध करती हैं ।

दलगत राजनीति

- दल में आपस में एक जिम्मेदारी उत्तरदायित्व, विभिन्न प्रकारके लाभ का लोभ होता है ।

  अतः गलत में भी सभी साथ रहते हैं ।

- सभी दलों में कुछ अच्छे व्यक्तित्व हैं, परन्तु 'दल' के चलते न सिर्फ वे एक समूह (Team) के रूप में कार्य करते हैं बल्कि एक दूसरे के विरुद्धतर्क / कुतर्क / कुचक्र भी करते हैं।

'दल' का 'बल'

व्यवस्थापिका का एक सदस्य जब सभी व्यवस्था को उलट देता है कार्यपालिका के अधिकारी को कानून अपने हाथ में लेकर पिटाई करता है, सरकारी वैधानिक आदेश का पालन नहीं करने देता – जेल जाता है तो छूटने पर दल के लोग नायक की तरह स्वागत करते हैं। यह एक गैंग का ही व्यवहार है।

यह सब 'दल' के 'बल' पर होता है।

प्रधानमंत्री का आक्रोश अपने दल के सदस्य के विरुद्ध सराहनीय है। प्रधानमंत्री ने हमारा विश्वास कायम रखा BJP को भी बचाया, लोकतंत्र को भी। लोगों को भी। उदाहरण भी पेश किया।

70

दल का लोकतंत्र

एक दल (कांग्रेस) के लोग अपना अध्यक्ष नहीं चुन पा रहे हैं क्यों ?

- क्योंकि दल में लोकतंत्रा है ही नहीं।
- सभी चापलूसी करना चाह रहे है ।
- समर्पण न दल के प्रति है न देश के प्रति।
- विचारधारा कहाँ गई ?
- वंशावली के अलावे क्या है।
- एक प्रमुख दल राजतंत्र से भी वदतर व्यवहार कर रहा है। हमारे लोकतंत्र का क्या होगा ?

71

दल का लोकतंत्र

हार को स्वीकार नहीं करना, उसी EVM को दोषपूर्ण कहना जिससे वे खुद चुने गए हैं, बिल्कुल गैर–जिम्मेदाराना है।

- लोकतंत्रा में अविश्वास है।
- आवाम के प्रति अविश्वास है।
- उसकी इच्छा को नकारना है।
- वोट को नकारना है।
- ऐसा सिर्फ 'दल' के बल के कारण होता है ।

तलाश

दलगत राजनीति

आज कौन भारतीय है, जो कहते हैं कि जूनागढ़, हैदाबाद या गोवा का विलय गलत है?

- आज ऐसे लोग हैं जो कश्मीर के धारा 370 एवं 35A के समाप्ति पर सवाल उठा रहे हैं। उस समय भी उठा रहे थे। सिर्फ गलत कहते तो एक बात थी।
- ये ऐसे बयान दे रहे हैं जिससे पूरे भारत में यदि दंगे हों, अस्थिरता हो तो इन्हें अत्यंत प्रसन्नता होगी।
- इन्हें पुनः शासन में आने का एक मौका चाहिए भले ही देश के टुकड़े होकर।

दल की प्राथमिकता

यह कहना कि कश्मीर यदि हिन्दू बहुल होता तो ये धारायें नहीं हटती।

- "हम ही प्रधानमंत्री बनेंगे", इस चाह से ही भारत और पाकिस्तान का निर्माण हुआ, जिसका खामियाजा अबतक दोनों देशवासी भुगत रहे हैं।
- एक दूसरे को मार–काट रहे हैं, नीचा दिखा रहे हैं जबकि लड़ने के और भी मुद्दे हैं और ज्यादा महत्वपूर्ण मुद्दे हैं।

इस तरह की बयानबाजी को सच्चाई/तर्क की कसौटी पर कसा जाना चाहिए, दंड का प्रावधान होना चाहिए।

तलाश

दलगत राजनीति

यह भी बहुत सुखद है कि कांग्रेस के कुछ युवा एवं वृ(भी पार्टी से अलग सरकार की उक्त कारवाई (370 एवं 35A की समाप्ति) को सही करार करते हैं।

- ये दोनों ही बातें इस तलाश–विचार के उदाहरण है कि दलगत राजनीति एकदम गलत है।
- विचारणीय यह भी है कि पूरे भारत के हित एवं जनमत के बिल्कुल खिलाफ बोलने वालों के विरु(पुरजोर आवाज नहीं उठते । जनमत को प्रसारित करने का कोई साधन, कोई उपाय नहीं है।

जबकि सांसद, विधायक के वेश में आप भी कुछ भी कह/कर सकते हैं ।

आप स्वयं ध्यान दें ।

दलगत राजनीति की

अनगिनत अन्य बुराईयाँ

सामने आने लगेगी ।

चन्दन है इस देश की माटी...

तपो भूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा–बच्चा राम है।
चन्दन है इस .....
हर शरीर मंदिर सा पावन
हर मानव उपकारी है।
जहाँ सिंह बन गए खिलौने,
गाय जहाँ माँ प्यारी है।
चन्दन है इस .....
जहाँ सवेरा शंख बजाता
लोरी गाती शाम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा – बच्चा राम है।
चन्दन है इस .....
जहाँ कर्म से भाग्य बदलते,
श्रम निष्ठा कल्याणी है,

लगातार

चन्दन यह इस देश माटी....

त्याग और तप की गाथाएँ गाती कवि की वाणी है।

ज्ञान जहाँ गंगा जल सा
निर्मल है, अविराम है
हर बला देवी की प्रतिमा,
बच्चा–बच्चा राम है।
चन्दन है इस .....
इसके सैनिक समर भूमि में
गाया करते गीता है।
जहाँ खेत में हल के नीचे,
खेला करती सीता है।
जीवन का आदर्श यहाँ पर
परमेश्वर का धाम है।
चन्दन है इस .....
तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा–बच्चा राम है।
चन्दन है .....।

आपकी आलोचना, असहमति, सुझाव का स्वागत है।

सम्पर्क
अतुल कुमार
मो०–8935885844
एवं अन्य सम्पर्क
H/3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग
पटना–800 020